International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

मंडन मिसिर की खुरपी कहानी में महानगरीय बोध

प्रा.डॉ. पी .एम.भुमरे

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभागप्रमुख, एस.एम. बी. पी.के महाविद्यालय,शंकरनगर , तह- बिलोली, जि.- नांदेड

Abstract

जहां पर बड़ी संख्या में लोग निवास करते हैं वहाँ पर उद्योग, सेवा, तकनीकी और शिक्षा के जैसे माध्यमों की विविधता होती हैं।गाँव की तुलना में महानगरीय परिवेश भिन्न होकर नव विचारों के सृजन में तीव्र गति से आगे बढ़ता है।जिसके कारण से व्यक्ति, समाज में क्रांतिकारी बदलाव आते हैं।साथ ही आर्थिक स्वावलंबन के कारण वैचारिक भिन्नता भी देखी जाती हैं।महानगरों में महँगाई और निवास की समस्या है जिसके परिणाम से संयुक्त कुटुम्ब पद्धति का विघटन और विभक्त कुटुम्ब परिवार का प्रचलन बढ़ जाता हैं।जिसके कारण महानगरीय जीवन संवेदनाहीन, पारिवारिक घुटन, जीवन मूल्यों के प्रति अनास्था जैसी प्रवृत्तियाँ बढ़ जाती है।प्रस्तुत कहानी में महानगरीय संस्कृति और जीवन में जो बदलाव आए है उनको अभिव्यक्त करना साथ ही गाँव और महानगरीय जीवन के वैषम्य से अवगत कराने का उद्देश्य रहा हैं।

Keywords- मशीनी सभ्यता, घुटन और मानसिक संत्रास, आदर्श कुटुंब, व्यक्ती स्वातंत्र्य, जीवन में मूल्यों के प्रति यथार्थ, वृद्धों में स्वास्थ्य समस्याओं, जीवन में संवेदनशून्यता ।

प्रस्तावना-

बड़ी संख्या में जहां पर लोग रहते हैं साथ ही उद्योग, व्यवसाय और सेवा क्षेत्र से उपजीविका चलाते हैं। ऐसे ही विस्तारित भू प्रदेश पर निवास करने वालेगश गाँव या कस्बे को महानगर से संबोधित किया जाता है । भाषा, धर्म और पंथ की विविधता जहां पर होती है उसे बड़े शहर या महानगर कहा जाता है । गाँव और शहरी जीवन एक दूसरे से भिन्न होता है जिससे सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक समस्याओं में मूलभूत अंतर होता है। मनुष्य जिस परिवेश में रहता है उसी परिवेश से आर्थिक और सामाजिक व्यवहार प्रभावित होते हैं। स्वतंत्रता के बाद नागरीकरण और औद्योगीकरण ने जोर पकड़ा है। इस कारण गाँव और कस्बों से लोगों का स्थानांतरण शहर की और होता रहा है।जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक परिवेश में बदलाव आए हैं। अतः महानगरों की विभिन्न समस्याओं से प्रभावित होकर साहित्यकारों ने साहित्य का विषय बनाया है। हिंदी के कथा साहित्य में मार्मिक और यथार्थ रूप में समस्याओं का उद्घाटन हुआ है ।इसी परंपरा में सूर्यनाथ सिंह द्वारा लिखित मंडन मिसिर की खुरपी कहानी भौतिक विचारों के प्रभाव से, महानगरीय मायाजाल से लोग प्रभावित हो रहे है।जिसके कारण लोगों के जीवन में मुल्य, विचार, रहन-सहन, आपसी रिश्ते और सामाजिक व्यवहार के जैसे सभी क्षेत्रों में बदलाव आए हैं।जिसका मार्मिक उद्घाटन प्रस्तुत कहानी में हुआ है।

महानगरीय जीवन की स्थिति -

हम देखते हैं कि, महानगरों में आर्थिक सधनता होती है। क्योंकि महानगरों में आर्थिक स्रोत अधिक होने से लोगों की उपजीविका उस पर चलती है। लोगों के पास पैसा अधिक आने से जीवन के विविध आयाम भी प्रभावित होते रहे हैं । मंडन मिसिर की खुरपी कहानी में मंडन मिसिर के बेटे बेंगलुरु जैसे महानगर से इंजीनियर की पढ़ाई करते हैं । पढ़ाई समाप्त होते ही बेंगलुरु में ही अच्छा सा आर्थिक पैकेज उन्हें मिलता है । जिस कारण मंडन मिसिर के बेटे की आर्थिक

उन्नति होने से जीवन में बदलाव आते हैं। महानगर का चक्काचौंध परिवेश गाँव जाने से रोकता है। डॉ. सीमा गुप्ता कहती है कि, "वे नगर जो अपने विकास के द्वारा राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पूर्ण रूप से प्रभाव स्थापित कर लेते हैं उन्हें महानगर की संज्ञा से अभिहित किया जाता है"1। मंडन मिसिर इस कहानी के नायक हैं।उन्हें एक बेटा और तीन बेटियां हैं। बाप की जिम्मेदारी को ठीक तरह से निभाते रहे और लड़कियों के शादी ब्याह में धूमधाम से पैसे खर्च करते हैं। उन्हें एक बेटा भी हैं जो बेंगलुरु में पढ़ाई करके वहीं पर बस गया हैं। अपने ही दूर के रिश्तेदारों में बेटे की शादी करके मंडन मिसिर अपने जिम्मेदारी से मुक्त हो जाते हैं। बेटे बड़े होते गए। उम्र के बढ़ते ही व्यक्ति के जीवन में शिथिलता आ जाती है, वैसी ही शिथिलता आ जाने से मंडन मिसिर को अपनों की याद आती है।गाँववाले भी मंडन मिसिर को बेंगलुरु जाने की जिद करते हैं, वैसे ही कुछ दिनों के लिए मंडन मिसिर बेंगलुरु जाते हैं तो कुछ दिनों में ही वापस लौटते हैं। महानगरीय जीवन गाँव में रहने वालों की अपेक्षाओं पर पानी फेरता है। महानगर में ना कोई बोलने वाला होता है साथ ही घरों के दरवाजे हमेशा बंद ही रहते हैं। महानगरों के हालात ऐसे होते हैं कि, लोग आर्थिक संकट से जुझते रहते हैं। क्योंकि उन्हें महँगाई से जुझना पड़ता हैं। बेटे और बहू की अपेक्षाओं को पूरा करने हेतु मंडन मिसिर पहले से ही खेती बेचते हैं और जो उनके पास खेती बची है उस कारण भी बेटे और बहू में अनबन होती हैं। प्रस्तुत कहानी में बेंगलुरु में रहने वाला दंपति, घुटन और मानसिक संत्रास से जीवन जीने की कोशिश करता है। उनके जीवन में आर्थिक समस्या तो है ही साथ ही गाँव से पिता कुछ दिनों के लिए रहने आते हैं तो कई समस्याओं से सामना करना पड़ता है। जैसे मंडन मिसिर के कथन से महानगरों का जीवन आसान नहीं होता। कई समस्याएं दिन-ब-दिन परिवार के सामने खड़ी रहती है। जैसे, "नया जमाना है, नए जमाने की अपनी तकलीफें है।बेटा-बहू दोनों नौकरी करते हैं। उनकी अपनी व्यस्तताएं हैं।बड़े शहर की समस्याएं अलग है"2 मंडन मिसिर महाराज बड़े ही समझदार है, क्योंकि वे गाँव में ही रहकर खेती-बाड़ी देखना चाहते हैं, बेटे और बहू पर अपने विचार लादना नहीं चाहते।गाँवों की तुलना में महानगरीय लोग स्वतंत्र विचारों के होते हैं।क्योंकि शिक्षा एवं तकनीकी के साधनों के उपयोग से नई पीढ़ी तीव्र गति से प्रभावित होती हैं।नगरीय लोगों की विशेषता पाई जाती है कि, वे अर्थ एवं विचार की दृष्टि से स्वनिर्भर होते हैं।जिसके कारण उनका जीवन भी प्रभावित होता है।

<u>महानगरीय जीवन में संवेदनशून्यता</u> -

स्वतंत्रता के बाद स्वतंत्र विचारों का प्रचार एवं प्रसार अधिक हुआ है। सबसे ज्यादा प्रभावित तो महानगर रहे हैं। आर्थिक उन्नति से कई साधनों का उपभोग की प्रवृत्ति बढ़ गई हैं जिसके परिणाम मानव वृत्ति संवेदनहीन बनने में हो चुकी है।आपसी रिश्तों में आत्मीयता न रहने से मशीनी सभ्यता के जैसे रिश्ते जड्वत बन गए हैं। कहानी में मंडन मिसिर के बेटे द्वारा खेती बेचना, बुढ़ापे में अकेले जीवनयापन करने के लिए मजबूर करना, जिससे आज के मनुष्य की संवेदनशून्यता की क्षुद्र मनोवृत्ति का प्रदर्शन होता है। जैसे बूढ़े बाप के प्रति बहू और बेटे की मानसिक संकीर्ण प्रवृत्तियाँ अभिव्यक्त होती है। जैसे- "दो महीने पहले बेटा आया था। खेत बेचने से मिले पैसे लेकर चला गया। एक बार भी नहीं कहा कि, पिताजी आप हमारे साथ चलिए"।3 तब से मंडन मिसिर गांव से लापता हो जाते हैं। मंडन मिसिर अपने पास खुरपी रखते थे। खुरपी रखने की उन्हें जो आदत पड़ गई थी जिसके कारण उठते बैठते समय उन्हें खुरपी का ही स्मरण हो जाता था। परंतु सारे खेत बेचने से खुरपी का काम ही नही था। साथ ही ल़डकियों की शादियों और बहू- बेटे के अनबन से खेती बेच दी गई थी। खेती नहीं बचा पाए तो खुरपी कहां चलाएं? इस कारण खुरपी जहां पडी कई दिनों तक वही रही। परंतु एक दिन बालू की बहू को मंडन मिसिर महाराज की खुरपी दिख पड़ी। जब बालू खुरपी लेकर मंडन मिसिर के घर पहुंचे परंतु घर के भीतर से आवाज लगाने पर भी कोई प्रतिक्रिया नहीं आई।लोग डर गए यह सोचकर कि, मंडन मिसिर महाराज कहां गायब हो गए।उनके आने का इंतजार किया जाने लगा परंतु गाँव के लोगों ने मंडन मिसिर की खोज में खेतों, बाग- बगीचों और मंदिरों में भी चक्कर लगाए। चारो ओर छानबीन की कहीं पर भी उनकी खोज ना हो पाई।

लोगों में आपसी तरह-तरह की चर्चा होने लगी, परंतु कहीं से भी कोई सूचना नहीं मिली।करीब एक महीने के बाद किसी ने सूचना दी। की मंडन मिसिर अयोध्या में संन्यासी के भेष में दिन काट रहे हैं। कहां जाता है कि, सब्र का फल मीठा होता है परंतु उसके लिए प्रतिक्षा भी करनी पड़ती है। जो आज नई पीढ़ी में संयम लगभग समाप्त हो चुका है ।मंडन मिसिर के पास सब कुछ था परंतु अपनों ने ही उनके साथ धोखा किया था । बुरा समय आने पर अपना कोई नहीं होता ,अपने भी अपनों से मुंह फेर लेते हैं। इसी प्रकार की अनुभूति मंडन मिसिर ने झेली हैं । जितनी पीड़ा अकेलेपन से होती है उतनी पीड़ा किसी भी अन्य हादसों से नहीं होती। कठिन समय में जीवन जीने का आधार, परीवार और अपने होते है। परन्तु जब अपने ही साथ नहीं देते, ताने मारते हैं तो विवश होकर दिन काटते पडते है।मंडन मिसिर बेटियों की शादी के बाद अपना जीवन पोते और बेटे-बहु के साथ व्यतीत करना चाहते हैं। परंतु जब बेटे और बहू के द्वारा अपमान, भर्त्सना हो जाने पर उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुंचती हैं।इससे यह स्पष्ट होता है कि, जितना भी धन, मान ससम्मान कमाया है हानि होने में देर नहीं लगती।उम्र बढ़ने के साथ बुढ़ापे को जिस सहारे की आवश्यकता होती है जो बहु और बेटे के स्वार्थी व्यवहार से टूट जाती हैं।बहु और बेटे की अनबन, उनकी वृद्ध पिता की ओर देखने की दृष्टि से जीवन के अंत में पीड़ा और अकेलेपन की यातना झेलनी पड़ती हैं।जिस गाँव में बचपन से लेकर बुढ़ापे तक जीवन की यादे जुड़ी रहती हैं। उसी गांव को छोडकर जाना इससे बड़ा कोई दुःख नहीं है।आधुनिकता के दौर में मनुष्य किसी भी बंधनों में रहना नहीं चाहता। पहलें ज़माना था कि बंधन स्वेच्छा से अंमल में लाए जाते थे, आज युग ही ऐसा है कि, कोई भी बंधन बोझ बनते जा रहे हैं। वर्तमान में भौतिक प्रगति से नए संसाधनों का आविष्कार हुआ है जिससे लोगों को शिक्षा, रोजगार के कारण बड़े महानगरों में जाकर रहना पड़ता है ।तात्पर्य यह है कि,महानगरीय लोगों के जीवन में जड्वत व्यवहार अधिक पाए जाते हैं।एक दूसरे के प्रति उनमें संवेदना हीन भावना होती हैं।रिश्तों में स्वार्थ की भावना अधिक होने से, मान-प्रतिष्ठा की स्पर्धा से रिश्ते अधिक दिनों तक निभा नहीं पाते।

<u>महानगरों में पारिवारिक संबंध-</u>

भारतीय समाज नीति मूल्यों और परंपराओं का पालन पोषण करने वाला समाज है। हमारे समाज में संयुक्त कुटुम्ब पद्धति प्रचलित रही है और आज भी गाँव में प्रचलित है परंतु शहरों में विभक्त परिवार पद्धति का प्रचलन बढ़ गया है । जिससे आदर्श कुटुंब पद्धती टूटने के कगार पर है । इस कुटुम्ब पद्धति में परिवार में दो या तीन पीढियों के सभी मिलजुल कर रहते है।सभी के विचारों से पारिवारिक निर्णय होते हैं परंतु आज व्यक्ति स्वतंत्रता के कारण बड़ो के विचार मानने की परंपरा समाप्त हो चुकी है। " इसमें संदेह नहीं कि, आज एकल परिवार ,शहरीकरण , कम आय, और घरों की कमी कुछ ऐसे कारण है जिन्हें लेकर इंग्लैंड,अमेरिका, जापान, जर्मनी, कनाडा जैसे देश भी जूझ रहे हैं।परंतु जहां युवक गाँव या नगर छोड़कर शहर जा रहे हैं, परिस्थिति गंभीर बनी हुई है। ऐसे गाँव और नगर बुढों से बहरे हुए है"।4 गाँव हो या शहर में वृद्ध के प्रति हमदर्दी नहीं है। शहर में लोगों के बड़े सपने होते हैं।उन्हें हकीकत में पूरा करने हेतु कई समस्याओं को न्यौता देने जैसा है। जैसे निवास की समस्या तो है साथ ही आर्थिक तंग भरा परिवेश भी है। "आज खेत बेच के घर और गाड़ी खरीद लेंगे।फिर कल का क्या"5। खेती- बाड़ी ऐसा धन है जिसकी कीमतों में वृद्धि होती है। लोग अपनी आर्थिक हैसियत न देखते हुए घर, कार खरीदना चाहते हैं।वह भी बैंक के किश्तों पर। ऐसी स्थिति में रिश्ते भी प्रभावित होते हैं जैसे कि, बाप-बेटे और बहू के पारिवारिक रिश्तों की आत्मीय संवेदना समाप्त हो जाती है।इस कहानी में भी बहू-बेटा,और बाप के रिश्ते में दरार आ गई हैं, जिसका कारण आर्थिक तंगी भरा परिवेश रहा हैं।

<u>महानगरीय परिवेश में महिलाओं की स्थिति-</u>

आधुनिक युग में अपने अधिकारों के लिए सजग रहना आवश्यक है परंतु अपनी जिम्मेदारियों को निभाना भी फर्ज बनता है।। महिलाओं को समान अधिकार मिलने से उन्हें शिक्षा के साधन उपलब्ध हुए, जिससे महिलाओं को शिक्षा और

रोजगार में अवसर मिल गए।महिलाओं को रोजगार मिलने से उनमें आर्थिक सधनता आने लगी हैं।जिससे जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदला है। शिक्षा के परिणाम से ही जो पहले बोल नहीं सकते थे, वह अब अपना पक्ष भी खुलकर रखते हैं । इस कहानी की शैलजा अपने पति तथा ससुर के सामने अपना विचार व्यक्त करती है जैसे "आसमान से पैसे बरसाने वाले हैं एक बेटी हो गई है ,बड़ी होगी तो शादी विवाह का खर्चा"।6 जिससे यह जाहीर होता है कि, आज की स्त्री आत्मनिर्भर होने से अपने परिवार और भविष्य की चिंता भी करती है। व्यक्ती स्वतंत्रता नगरों में अधिक होने से घर, परिवार में भी पारिवारिक सदस्यों में सहमती नहीं बन पाती।जैसे "व्यक्ती स्वातंत्र्य के इस ज़माने में हर स्त्री-पुरुष, अपने-अपने अस्तित्व के प्रति अतिरिक्त सज़ग है"7।लोग अपने अधिकारों के लिए सजग रहना होशियार रहने की बात है परंतु वृद्ध माता-पिता का ऋण भी चुकाना पड़ता है, इसका भी स्मरण रहना चाहिए।शिक्षा तथा औद्योगिककरण के वृद्धि से लोग आर्थिक रूप से स्वतन्त्र है। मंडन मिसिर घर के वृद्ध व्यक्ति है।उनके समय में घर की महिलाएँ वृद्धों का सम्मान करती थी साथ ही घर के बड़े व्यक्ती के सामने लज्जा, संकोच से व्यवहार करती थी। बड़ों के सामने पल्लू भी उतरने से निंदनीय माना जाता था। लेकिन आधुनिक परिवेश में व्यक्ति के सोच में बड़े बदलाव आए है । इससे शिक्षा एवं रोजगार के कारण स्त्रियों को भी व्यवहार में समान अधिकार मिला है। व्यक्ति स्वतंत्रता के नाम पर संयुक्त कुटुंब पद्धति का विघटन हुआ, भौतिक संस्कृति में वृद्धों के आर्थिक परालंबन से वृद्धों के प्रति देखने से नजरिया बदल गया है। वृद्ध जब युवक थे तो उनका भी महत्व था। क्योंकि मंडन मिसिर ने भी गांव के समाज का मुखिया के रूप में मार्गदर्शन किया है। पूरे गाँव में उनकी बात में दम था, परन्तु वृद्धत्व के चलते अपने ही घर निराधार होना पड़ा है।गाँव की तुलना में महानगर की स्त्रियों में अन्याय, अत्याचार के प्रति विद्रोह है।महानगर की स्त्री में शिक्षा तथा स्वतंत्रता के परिणाम से अपने अधिकारों के प्रति सजग है साथ ही संघर्ष करके सम्मानजनक का अधिकार पाती हैं।

<u>महानगरीय जीवन में मूल्यों के प्रति यथार्थ स्थिति-</u>

वर्तमान में भी हमारी संस्कृति के दर्शन गाँव av में होते हैं । सहृदय भाव, बंधुत्व की भावना गाँव के भोले इंसानों में बसी हुई है। संकट के प्रसंग में एक दूसरे का सहयोग करते हैं । बल्कि इससे से विपरीत महानगरों में कठिन प्रसंगों में किसी से भी सहायता नहीं मिलती। अपने रिश्तों में व्यापारों के सापेक्ष मापदण्ड आने से रिश्ते व्यवहारिक बन गए हैं।जैसे "वास्तव में नई पीढ़ी की व्यस्तता के साथ ही असहिष्णुता, संवेदनहीनता और कृतघ्नता भी वृद्धों को वृद्ध बनाने में सहायक होती हैं।" 8 लोग अपने कामों में इतने व्यस्त होते हैं कि,उन्हें सहायता हेतु समय नहीं मिलता । परंतु आज शहरों में रिश्तों की जड़े टूट चुकी है। मंडन मिसिर की बहू बड़ों का निरादर करते हुए कहती है कि, "पता नहीं किन गंवार लोगों के पल्ले पड़ गई मैं । मैं कहती कुछ और हूं यह समझते कुछ और है।"9 यह विचार दर्शाता है कि, बड़ों के प्रति सम्मान का भाव विलुप्त होता हुआ सा नजर आता है। साथ ही इस कहानी में मंडन मिसिर वृद्धत्व के कारण अपने बेटे से अपेक्षा भी करते हैं। जैसे मंडन मिसिर बेंगलुरु में जाते ही उन्हें अत्यधिक आनंद भी होता है। क्योंकि पोते को गोद में लेकर उनके दिन कब कट जाते हैं,उन्हें पता भी नहीं चलता। कहते हैं कि, सुख के दिन जल्दी गुजर जाते हैं परंतु दुख के पल कटते ही नहीं है । नए और पुराने पीढ़ी में आपसी विचारों के आदान- प्रदान से ही मूल्य,और संस्कृति का प्रचार एवं प्रसार होता है। जैसे वृद्धों के पास समय और जीवन का अनुभव होता है। वह अनुभव से बच्चों को मनोरंजन के माध्यम से हितोपदेश करते हैं। जिससे हमारी संस्कृति,रीति -रिवाज ,परंपराओं का ज्ञान होता है । जीवन में कठिन प्रसंगों की अनुभूति,पीड़ा केवल किताबों से ही नहीं मिलती बल्कि जीवन में प्रत्यक्ष अनुभव से आनंद और दुःख की अनुभूति होती है। इसी प्रकार का वास्तविक प्रसंग निम्न रूप से आया है।इस कहानी में मंडन मिसिर जब अपने पोते के साथ समय बिताते हैं परंतु जैसे ही उनके द्वारा किसी भी प्रकार की आर्थिक सहायता न होते देखकर बहू अपने पिता जैसे ससुर की भर्त्सना करती है। साथ ही अपने बेटे को वृद्ध दादा के पास जाने से रोकती हैं।दादाजी अपने पोते की चाह से उन्हें मिलने जाते हैं, वैसे ही बहू उनपर चिढ़ जाती हैं।जैसे "उसी को देखने गए थे मिसिर महाराज खूब सारा भेंट ऊपहार ले के। पोते

का मुंह देखकर बड़े निहाल हुए थे। मगर तभी बहू का असली रूप भी देखा"।10 बुढ़ापे में जो समदुखी होते हैं, बच्चों में उनकी दोस्ती पक्की बनते देर नहीं लगती। जैसे, बच्चों में रहकर शांति से जीवनयापन करने के सपने देखे थे, परंतु बुढ़ापे में उन्हें बेटा और बहू बोझ मानते रहे हैं। जब तक उनके पास खेती थी तब तक गांव में किसी भी तरह उपजीविका चलती थी, साथ ही समय भी कटता था । परंतु जब से खेती बेचकर पूरा पैसा बहू और बेटे को दिया है तब से उनके के प्रति देखने की दृष्टि बदल गई है। बूढ़ापा आने से शरीर थक जाता है ,दिमाग काम नहीं कर पाता ,साथ ही आंखों की रोशनी और सुनने की शक्ति कम हो जाती हैं। वृद्ध की अपेक्षा होती है कि,परिवार के साथ रहे । परंतु वर्तमान की भौतिक सोच को देखते हुए बूढ़ापा कठिन होते जा रहा है । यह कहानी बुढ़ापा आने से आर्थिक और सामाजिक प्रश्न किस प्रकार जटिल हो जाते हैं, उसकी और भी संकेत करती है ।

उपसंहार -

हमारे समाज में अपने रिश्ते जितने करीब आते हैं उतने ही उनकी जड़े खोकली होती है । स्वार्थ की आड़ में जो रिश्ते बनाए जाते हैं वे रिश्ते ज्यादा दिनों तक निभ नहीं पाते।जो रिश्ते अपेक्षा के आधार पर बनाए जाते हैं उन रिश्तों को टूटने में देर नहीं लगती । महानगरीय जीवन में इसकी संभावना अधिक है , क्योंकि महानगरीय जीवन की भौतिक सोच आर्थिक साधनों पर निर्भर होती है। जिससे सभी रिश्ते प्रभावित होते हैं । आज महानगरों को अनेक समस्याओं ने घेरा है परंतु उनमे से वृद्धों की समस्या विविध रूपों में अभिव्यक्त हो रही है। सामाजिक, आर्थिक परिणामों से वृद्धों को अकेलापन से जुझना पड रहा हैं जिसके परिणामस्वरूप वृद्धों में स्वास्थ्य समस्याओं में वृद्धि हो रही हैं। समाज, परिवार ने वृद्धों को थोड़ा समय भी दिया तो वृद्धों का जीवन सरल रूप से कट जाएगा साथ ही परिवार में वृद्धों का सम्मान, उनके रहन-सहन की व्यवस्था, मनोरंजन के साधन और उनके साथ वार्तालाप करें तो वृद्धों के जीवन में खुशियां पुर्नस्थापित हो सकती है।अगर हम सब मिलकर वृद्धों के जीवन को आसान बनाने हेतु,मानसिक आधार देकर उनके साथ समय बिताते हैं तो उनके जीवन में खुशहाली आ सकती हैं ।आधुनिकता के दौर में सभी क्षेत्रों में बदलाव की गति तीव्र है।गाँवों की अपेक्षा महानगरों में मुल्य और संस्कृति के प्रति उदासीन वृत्ति है।मानवीय मूल्यों का विघटन सबसे ज्यादा महानगरों में ही पाया जाता है।जिसका कारण आधुनिक युग की शिक्षा, संस्कार और अर्थ की विपुल उपलब्धियां रही हैं।

संदर्भ -

1. डॉ.सीमा गुप्ता-समकालीन हिन्दी उपन्यास-महानगरीय बोध,पृष्ठ - 07
2. डॉ सुजितसिंह परिहार - साहित्य सौरभ, संपादित पाठ्यपुस्तक, ,राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ -112
3. डॉ सुजितसिंह परिहार - साहित्य सौरभ, संपादित पाठ्यपुस्तक, ,राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ -111
4. चंद्र मौलेश्वर - वृद्ध विमर्श की अवस्था- पृष्ठ - 20
5. डॉ सुजितसिंह परिहार - साहित्य सौरभ, संपादित पाठ्यपुस्तक, ,राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ- 112
6. डॉ सुजितसिंह परिहार - साहित्य सौरभ, संपादित पाठ्यपुस्तक, ,राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ-112
7. मनीष सुथार - हिंदी कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श- वान्या पब्लिशकेशनस कानपुर, पृष्ठ - 40
8. वागर्थ-पत्रिका दिसंबर 1999 पृष्ठ- 08
9. डॉ सुजितसिंह परिहार - साहित्य सौरभ, संपादित पाठ्यपुस्तक, ,राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ-113
10. डॉ सुजितसिंह परिहार - साहित्य सौरभ, संपादित पाठ्यपुस्तक, ,राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ-112